HINDI - "The Two Roads"

दो मार्ग

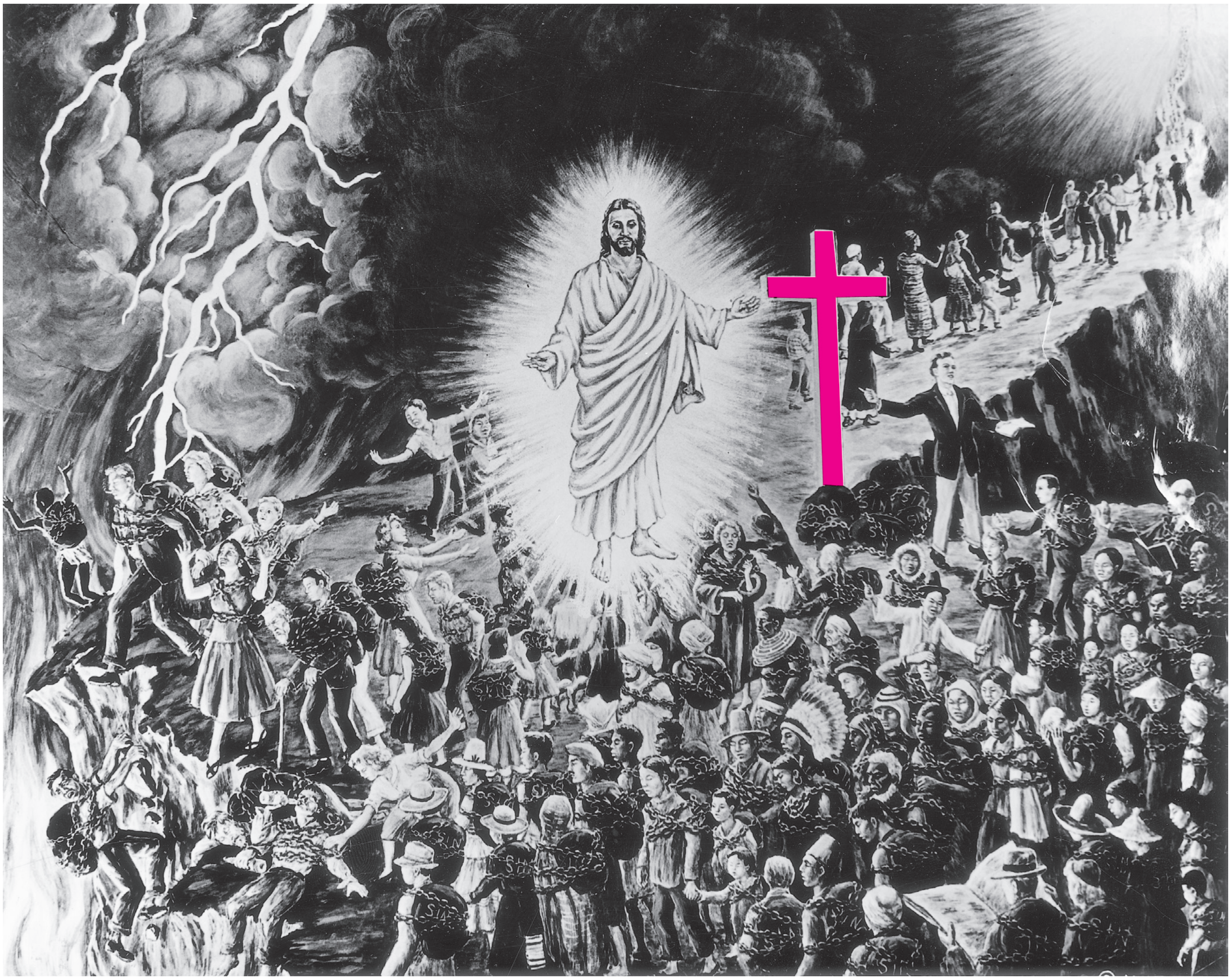

दो मार्ग

मार्ग का चुनाव :–जब कभी हम ऐसे स्थान की यात्रा आरम्भ करते जहाँ हम इससे पूर्व कभी नहीं गये हैं, तो हम पूछ ताछ करते कि हमें किस मार्ग को अपनाना है। और यदि हम जान जाते की हम ठीक मार्ग पर नहीं हैं तो चोकन्ने हो कर यात्रा करते और चारो ओर घूम कर ठीक मार्ग की खोज करते हैं।

प्रति दिन आप और मैं इस नश्वर ससार में से होकर नित्यता की ओर यात्रा कर रहें हैं, यह एक ऐसी भवितव्यता है जिसका कभी अन्त नहीं, जहाँ एक बार पहुँच जाने के पश्चात् परिवर्तित नहीं किया जा सकता। क्या आप जानते हैं कि आप कहाँ जा रहे हैं।

हमारी पथ प्रदर्शक पुस्तक :-परमेश्वर अपने प्रेम और दया के वशीभूत होकर हमको पथ प्रदर्शक पुस्तक बाइबिल दिया है, जो हमें स्पष्ट रूप से स्वर्गीय मार्ग प्रकाशित करती है। इस पर्चे में दिये गये उद्धरण बाइबिल से ही लिये गये हैं। "तेरा वचन मेरे पाँव के लिए दीपक और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।" (भजन० ११९:१०५)

चौड़ा मार्ग:-इस मार्ग में अनेको लोग पाये जाते हैं। "चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुँचाता है; और बहुतेरे हैं जो उसमें पाये जाते हैं।" (मत्ती ७:१३)

उसमें में अधिकांश लोगों ने अपनी आँखें बन्द कर रक्खी हैं। या तो वे जानते नहीं हैं या वे ध्यान नहीं देते हैं कि वे विनाश के पथ पर हैं। "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक दीख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।" (नीतिवचन १४:१२) "और उन अविश्वासियों के लिये जिनकी बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने (शैतान) अंधी कर दी है।" (२ कुरुन्थियों ४:४)

भार: इस मार्ग के अनुयायी पाप के भार से दबे हुए हैं। सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियों ३:२३) हम परमेश्वर से एक भी पाप नहीं छिपा सकते हैं।" मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।" (१ शामुएल १६:७) पाप भार मनुष्य की पीठ पर बन्धा है। हम अपने प्रयास के द्वारा एक भी पाप से छुटकारा पा नहीं सकते। जैसे २ समय बीतता जाता है, वैसे २ पाप भार भी बढ़ता जाता है, और "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।" (रोमियो ६:२३)

विद्युत:-चित्र में बिजली की चमक ईश्वरीय न्याय को दर्शाती है।" मनुष्य के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।" (इब्रानियों ९:२७) फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको जो उस पर बैठा हुआ है, देखा ....फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा और पुस्तकें खोली गई और फिर एक और पुस्तक खोली गई अर्थात् जीवन की पुस्तक, और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।" (प्रकाशितवाक्य २०:११-१५)

अग्नि: क्योंकि परमेश्वर पवित्र है और न्यायी, इसलिये पाप का दण्ड अवश्य ही है। परमेश्वर का वचन हमें बताता है एक नरक भी है जो परमेश्वर की आज्ञा न मानने वालों के लिए अनन्त दण्ड का स्थान है। बाइबिल कहती है, "दुष्ट अधोलोक में लौट जायेंगे, तथा वे सब जातियाँ जो परमेश्वर को भूल जातीं हैं।" (भजन ९:१७) आप का बड़ा बुरा होना ही केवल वहाँ जाने के लिये पर्याप्त है ऐसा नहीं, यह उनके लिए भी है जो परमेश्वर को भूल जाते हैं।

परन्तु परमेश्वर प्रेम का परमेश्वर भी है "वह नहीं चाहता कि कोई नाश हो, वरन यह कि सबको मन फिराव का अवसर मिले।" (२ पतरस ३:९) वह अपनी महान् करुणा और प्रेम के वशीभूत होकर, प्रत्येक चाहने वाले के लिये उसने बचाव का मार्ग तैयार किया है। क्या आप जीवन के मार्ग को प्राप्त करना चाहते हैं।

अद्वैत जीवन का मार्ग-अद्वैत मुक्तिदाता:-जब कि न तो हम स्वयं अपने पापों से, और न तो उस न्याय दण्ड से जो हमारे पापों के निमित्त निश्चित है छुटकारा प्राप्त कर सके, इस लिये परमेश्वर ने स्वम् उद्धार कर्ता का प्रबन्ध कर दिया है। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत् से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाये।" (यूहन्ना ३:१६)। स्वर्गीय पिता परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र प्रभुयीशु ख्रीष्ट को स्वर्ग से इस संसार में भेज दिया, वह एक मनुष्य की भाँति रहा, किन्तु कभी भी कोई पाप नहीं किया। वह भलाई करता फिरा, रोगियों को चंगा किया, कोढ़ियों को शुद्ध किया, दुष्ट आत्माओं से ग्रसित लोगों में से दुष्ट आत्मायें निकाली, पश्चातापी पापियों के पापों को क्षमा किया और लोगों को परमेश्वर के विषय में शिक्षा दी।

परन्तु उसका मनुष्य रूप धारण करने का सबसे महान् उद्देश्य हम सबके लिये बलिदान बनकर मरना था, अपना स्वर्गीय एवं पाप रहित जीवन देकर अपना बहुमूल्य लहू हमारे पापों के प्रायश्चित निमित्त बहाना था।

उसने अपने आप को दुष्ट मनुष्यों के हाथों में पड़ने दिया, उसने उस समय तक अपनी पीठ पर मार पड़ने दिया जब तक रक्त रंजित घावों से भर न गई, उसने अपने सिर पर काँटों का मुकुट पहिनाने दिया और अंत में क्रूस पर उसने अपने हाथों और पैरों में कीलें ठोकने दिया, जहाँ वह मृत्युयंत्रणा में लटक गया। "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुये क्रूस पर चढ़ गया।" (१ पतरस २:२४) वह आप के लिये मेरे लिये मर गया।

यीशु का पुनरुत्थान:-यीशु मसीह तीन दिन तक समाधि में रहने के पश्चात् जी उठा। और अपने शिष्यों के साथ चला

फिरा और बात चीत किया, और चालिस दिन के उपरांत स्वर्ग पर चढ़ाया गया, जहाँ वह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठा हुआ है—एक जीवित मुक्ति दाता "स्वर्ग और पृथ्वी के सम्पूर्ण अधिकार के साथ" (मत्ती २८:१८) 'इस लिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है।" (इब्रानियों ७:२५)

स्वर्ग : स्वर्ग वह स्थान है जहाँ परमेश्वर अपनी सम्पूर्ण महिमा के साथ निवास करता है। प्रभुयीशु ख्रीष्ट ने कहा 'मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ तो फिर आकर तुम्हे अपने यहाँ ले जाऊँगा, कि जहाँ मैं रहूँ, वहाँ तुम भी रहो। (यूहन्ना १४:२३)

यह एक अद्‌भुत स्थान है जहाँ "परमेश्वर उनकी आँखों का सब आंसू पोंछ डालेगा, और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक न बिलाप न पीड़ा रहेगी, पहिली बातें जाती रहीं। और फिर रात न होगी.... क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा।" (प्रकाशित वाक्य २१:४,२०; २२:५)

यह एक परम पवित्र स्थान है।" उसमें कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करने वाला, या झूठ का गढ़ने वाला किसी रीति से प्रवेश न करेगा, केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं। (प्रकाशित० २१:२७)

परन्तु स्वर्ग का केवल एक ही मार्ग है। प्रभु यीशु ख्रीष्ट ने कहा; "मार्ग, और सचाई और जीवन मैं ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता" (यूहन्ना १४:६) "और किसी के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।" (प्रेरित० ४:१२)

हम कैसे स्वर्ग का मार्ग प्राप्त कर सकते हैं ?

१—मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो। (मरकुस ० १:१५) मन फिराना अपने सम्पूर्ण हृदय को पाप से फिराकर परमेश्वर की ओर लगाना है।

२—प्रभु यीशु ख्रीष्ट के पास अपने पापों के बोझ को लिये हुये प्रार्थना में आइये और उससे प्रार्थना कीजिसे कि आपको क्षमा प्रदान करे। प्रभु ने कहा, जो कोई मेरे पास आयेगा उसे मैं कभी न निकालूँ। (यूहन्ना ६:३७) "हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुये लोगों, मेरे पास आओ मैं तुम्हे विश्राम दूंगा।" (मत्ती ११:२८)

३—अपनी मुक्ति के लिये ख्रीष्ट पर विश्वास कीजिये। "और उसके पुत्र यीशु का लहू हमे सब पापों से शुद्ध करता है" (१ यूहन्ना ० १:१७)

४—वह आप को नया जीवन देगा अर्थात्——अनन्त जीवन देगा। यीशु ने कहा "जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीत करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु के पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।" (यूहन्ना ५:२४) "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो वे सब नई हो गई।" (१ कुरु० ५:१७)

५—आप के पास शांति और भरोसा होगा। "सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें। (रोमि० ५:१) "और वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और यह जीवन उसके पुत्र में है। जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है, और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नही है। मैंने तुम्हे जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इस लिये लिखा है कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।" (१ युहन्ना ५:११, १२, १३)

नया जीवन कैसे व्यतीत करें :-

१—प्रति दिन बाईबिल अध्ययन करिये। हमारे मार्ग के लिए प्रकाश होने के अतिरिक्त यह हमारी आत्मा के लिये भोजन भी है। "नये जन्मे हुये बच्चे की नई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।" (१ पतरस २:२)। आप पढ़ते समय परमेश्वर से प्रार्थना कीजिये कि अपनी आत्मा के द्वारा आप को सिखाये और अगुआई करे।

२—प्रति दिन प्रार्थना में परमेश्वर की निकटता में आइये यीशु ख्रीष्ट के नाम से प्रार्थना कीजिये। "किसी बातकी चिन्ता मत करो: परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सन्मुख

उपस्थित किये जायें। तब परमेश्वर की शांति जो समझ से बिलकुल परे है तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी" । (फिलिप्पियो ४:६,७)

३-यीशु के विषय में दूसरों से बात चीत कीजिये । ("अपने घर जाकर अपने लोगों को बता, कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किये हैं" । (मरकुस ५:१६)

४ परीक्षा में प्रभु को पुकारिये । "क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है" । (इब्रा० २:१८)

५- यदि आप किसी पाप में गिर जाते हैं तो तुरन्त उसे परमेश्वर के सन्मुख स्वीकार कीजिये । "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। (१ यूहन्ना १:९)

६-दूसरे विश्वासियों से मसीह यीशु में सहभागिता प्राप्त करने का प्रयत्न कीजिये । "मेरी आज्ञा यह है कि जैसा मैंने तुमसे प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।" (यूहन्ना १५:१२)

७—सर्वदा परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन कीजिये । "यदि कोई मुझ से प्रेम रखे तो वह मेरे वचन को मानेगा।" (यूहन्ना १४:२३)

८—भयभीत न हो, क्योंकि मसीह आप के साथ हैं । "उसने कहा, मैं तुम्हें कभी न छोडूंगा, और न कभी भूलूँगा।" (इब्रानियों १३:५)

९—प्रभु यीशु ख्रीष्ट के हाथों में अपने को सम्पूर्ण रीति से समर्पित कीजिये । उसी की इच्छानुसार अपने को संचालित कीजिये । इस रीति से आप को वास्तविक परमानन्द प्राप्त होगा ।

प्रभु यीशु ख्रीष्ट ही एक मात्र मुक्तिदाता है और वह सिद्ध मुक्तिदाता है । वह सब कुछ है जिसकी आप को आवश्यकता है ।

ब्रदर डेविड बी० सिंह

रईसा मंज़िल (गोलघर)

अर्दली बाज़ार, वाराणसी

The popular "Heart Book" with its soul-saving message is obtainable in over 500 languages. Many have found salvation even just by looking at the pictures.

Our Heart of Man Book can now be downloaded in 480 different languages onto cell phones, tablets, etc from our website www.angp-hb.co.za.

Kindly write to us if you are able to assist us with further translations of our free Gospel literature, informing us of the language into which you could translate this Gospel literature. Your assistance would be appreciated.

If you have found salvation in Christ, or have been otherwise blessed through our Gospel literature, please let us know. We would like to thank God with you, and remember you further in our prayers.

For **free** Gospel literature, books and tracts in over 540 languages, write to:

E-MAIL: info@angp.co.za

ALL NATIONS GOSPEL PUBLISHERS

P.O. Box 2191, PRETORIA, 0001, R.S.A.

(A Gospel Literature Mission financed by donations)

(Reg. No. 1961/001798/08)